अथर्ववेद

काण्ड ४

सूक्त २

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Atharvaveda

Kaaṇḍa 4
Sookta 2

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

साराँश

इस सूक्त में "कस्मै देवाय हविषा विधेम" की पुनरुक्ति है। इसका तात्पर्य है कि ईश्वर की उपासना उसके गुण जानने के उपरान्त श्रद्धा पूर्वक करे, अन्धभक्ति में नहीं। यहाँ पर ईश्वर को सृष्टि का रचयिता और पालनकर्ता बताया गया है। वह ही सब उर्जाओं और ज्ञान का स्रोत है। ईश्वर ने ही जीवात्मा के अपवर्ग के लिए इस जगत् का निर्माण किया और उसके भरण पोषण के लिए प्रकृति को सञ्चालित करने वाले नियमों का विधान किया। वह नियम आदिकाल से बिना किसी रुकावट के सृष्टि को चला रहे हैं। वह ईश्वर ही ब्रह्माण्ड में सब ग्रहादि का आधार और उनके बीच सामजस्य का कारण है। उसके सिवा कोई और पूजा के योग्य नही है।

प्रथम मन्त्र में ईश्वर को सभी ज्ञान और बल का स्रोत व सभी प्राणियों का स्वामी बताया गया है।

वेन ऋषिः। आत्मा देवता। ४४ अक्षराणि। आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

य आ॑त्म॒दा ब॑ल॒दा यस्य॒ विश्व॑ उ॒पास॑ते प्र॒शिषं॒ यस्य॑ दे॒वाः।
यो॒३स्येशे॑ द्वि॒पदो॒ यश्चतु॑ष्पदः॒ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥१॥

अथर्व ४:१:२:१, ऋग् १०:१०:१२१:२-३, यजुः २३:३, यजुः २५:११, यजुः २५:१३

यः। आ॒त्म॒ऽदाः। ब॒ल॒ऽदाः। यस्य॑। विश्वे॑। उ॒प॒ऽआस॑ते। प्र॒ऽशिष॑म्। यस्य॑। दे॒वाः॥

यः। अ॒स्य॒। ईशे॑। द्वि॒ऽपदः॑। यः। चतुः॑ऽपदः। कस्मै॑। दे॒वाय॑। ह॒विषा॑। वि॒धे॒म॒॥१॥

वह (*कस्मै*) **कौन सुखस्वरूप** (*देवाय*) **देव है जिसको हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें?** (*यः*) **जो** (*आत्म*) **आत्मज्ञान का** (*दाः*) **दाता है, जो शारीरिक** (*बल*) **बल का** (*दाः*) **दाता है,** (*यस्य*) **जिसकी समस्त** (*विश्वे*) **विश्व** (*उपऽआसते*) **उपासना करता है,** (*देवाः*) **विद्वान** (*यस्य*) **जिसके** (*प्रशिषम्*) **विधान को मानकर उसका गुणगान करते हैं,** (*यः*) **जो** (*अस्य*) **इन** (*द्वि*) **दो** (*पदः*) **पैर वालों का,** (*चतुः*) **चार** (*पदः*) **पैर वालों का और** (*यः*) **जो अन्य सभी जीवों का** (*ईशे*) **स्वामी है, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।**

Synopsis

This composition implores everyone to first identify God's qualities and then worship him with unshakeable faith, instead of blindly following what others say. Here God has been identified as the creator and the sustainer of this entire universe and everything that exists. He is the source of all of the energies and knowledge. He created this universe and all of the rules governing this universe, for the benefit of the souls. These rules have been unaltered since the beginning of the creation. He is responsible for maintaining the smooth motion of all of the heavenly bodies. He is the only one worthy of our prayers and no one else.

In the first mantra the sage describes God as the source of all strength and knowledge and as the lord of all living beings.

ṛiṣhiḥ venaḥ, **devataa** aatmaa, **vowels** 44, **chhandaḥ** aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

1. **ya aatmadaa baladaa yasya vishva upaasate prashiṣhañ yasya devaaḥ, yo3syeshe dvipado yashchatuṣhpadaḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.** Atharva 4:1:2:1, Ṛig 10:10:121:2-3, Yajuḥ 23:3, Yajuḥ 25:11, Yajuḥ 25:13

yaḥ aatma-daaḥ bala-daaḥ yasya vishve upa-aasate pra-shiṣham yasya devaaḥ,
yaḥ asya eeshe dvi-padaḥ yaḥ chatuḥ-padaḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful** (*devaaya*) **divinity, unto whom we should** (*haviṣhaa*) **offer our praises and prayers with** (*vidhema*) **love and devotion?** (*yaḥ*) **He** (*daaḥ*) **gives us the** (*aatma*) **awareness that we are souls, and** (*daaḥ*) **provides us with** (*bala*) **mental and physical strength. Whole** (*vishve*) **universe** (*upaasate*) **worships** (*yasya*) **him, and** (*devaaḥ*) **wise people** (*prashiṣham*) **obey** (*yasya*) **his commands.** (*yaḥ*) **He** (*eeshe*) **controls** (*asya*) **all** (*dvipadaḥ*) **bipeds and** (*chatuṣhpadaḥ*) **quadrupeds. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

दूसरे मन्त्र में ईश्वर को सभी प्राणियों व जड़ प्रकृति का स्वामी बताया गया है।

वेन ऋषिः। आत्मा देवता। ४१ अक्षराणि। भुरिगार्षी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

यः प्रा॑णतो नि॑मिषतो म॑हित्वैको॒ राजा॒ जग॑तो ब॒भूव॑।

यस्य॑ छा॒याऽमृतं॒ यस्य॑ मृ॒त्युः कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥२॥

अथर्व ४:१:२:२, ऋग् १०:१०:१२१:२-३, यजुः २३:३, यजुः २५:११, यजुः २५:१३

यः। प्रा॒ण॒तः। नि॒ऽमि॒ष॒तः। म॒हि॒ऽत्वा। एकः॑। राजा॑। जग॑तः। ब॒भूव॑॥

यस्य॑। छा॒या। अ॒मृत॑म्। यस्य॑। मृ॒त्युः। कस्मै॑। दे॒वाय॑। ह॒विषा॑। वि॒धे॒म॒ ॥२॥

वह (*कस्मै*) **कौन सुखस्वरूप** (*देवाय*) **देव है जिसको हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें?** (*यः*) **जो अपनी** (*महित्वा*) **महिमा के कारण** (*जगतः*) **जगत में** (*प्राणतः*) **प्राणियों व** (*निमिषतः*) **अप्राणियों का** (*एकः*) **एकमात्र** (*राजा*) **राजा** (*बभूव*) **है,** (*यस्य*) **जिसकी** (*छाया*) **शरण** (*अमृतम्*) **अमृत के समान है और** (*यस्य*) **जिसका न मानना ही** (*मृत्युः*) **मृत्यु के समान है, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।**

तीसरे मन्त्र में संसार की व्यवस्था का कारक ईश्वर को ही बताया गया है।

वेन ऋषिः। आत्मा देवता। ४४ अक्षराणि। आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

यं क्रन्द॑सी॒ अव॑तश्चस्कभा॒ने भि॒यसा॑ने॒ रोद॑सी॒ अह्व॑येथाम्।

यस्या॒सौ पन्था॒ रज॑सो वि॒मानः॒ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥३॥

अथर्व ४:१:२:३, ऋग् १०:१०:१२१:५-६, यजुः ३२:६-७

यम्। क्रन्द॑सी॒ इति॑। अव॑तः। च॒स्क॒भा॒ने इति॑। भि॒यसा॑ने॒ इति॑। रोद॑सी॒ इति॑। अह्व॑येथाम्॥

यस्य॑। अ॒सौ। पन्थाः॑। रज॑सः। वि॒ऽमानः॑। कस्मै॑। दे॒वाय॑। ह॒विषा॑। वि॒धे॒म॒ ॥३॥

वह (*कस्मै*) **कौन सुखस्वरूप** (*देवाय*) **देव है जिसको हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें?** (*यस्य*) **जिसके बनाये** (*असौ*)(*पन्थाः*) **मार्गों पर** (*रजसः*) **ग्रह नक्षत्रादि** (*चस्कभाने*) **एक दूसरे को गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा धारण करते हुए** (*क्रन्दसी*) **तेज गति से** (*विऽमानः*) **चलते रहते हैं** (*यम्*) **जिसको इन** (*रोदसी*) **ग्रहों नक्षत्रों के निवासी** (*भियसाने*) **भय की अवस्था में** (*अवतः*) **रक्षा के लिए** (*अह्वयेथाम्*) **पुकारते हैं, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।**

In the second mantra the sage describes God as the lord of all living beings and non-living things.

ṛiṣhiḥ venaḥ, **devataa** aatmaa, **vowels** 41, **chhandaḥ** bhurig aarṣhee paṅktiḥ, **svaraḥ** pañchamaḥ.

2. yaḥ praaṇato nimiṣhato mahitvaiko raajaa jagato babhoova,
yasya chhaayaa'mṛitañ yasya mṛityuḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema. Atharva 4:1:2:2, Ṛig 10:10:121:2-3, Yajuḥ 23:3, Yajuḥ 25:11, Yajuḥ 25:13

yaḥ praaṇataḥ ni-miṣhataḥ mahi-tvaa ekaḥ raajaa jagataḥ babhoova,
yasya chhaayaa amṛitam yasya mṛityuḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful** (*devaaya*) **divinity, unto whom we should** (*haviṣhaa*) **offer our praises and prayers with** (*vidhema*) **love and devotion?** (*yaḥ*) **He, through his** (*mahitvaa*) **glory,** (*babhoova*) **is the** (*eka*) **sole** (*raajaa*) **king of this entire** (*praaṇataḥ*) **breathing as well as** (*nimiṣhataḥ*) **quiescent** (*jagataḥ*) **world. Under** (*yasya*) **his** (*chhaayaa*) **shelter flows the** (*amṛitam*) **nectar of immortal bliss, and opposing** (*yasya*) **him brings us closer to** (*mṛityuḥ*) **death. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the third mantra the sage describes God as the manifest cause of the smooth celestial motion.

ṛiṣhiḥ venaḥ, **devataa** aatmaa, **vowels** 44, **chhandaḥ** aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

3. yaṅ krandasee avatashchaskabhaane bhiyasaane rodasee ahvayethaam,
yasyaasau panthaa rajaso vimaanaḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema. Atharva 4:1:2:3, Ṛig 10:10:121:5-6, Yajuḥ 32:6-7

yam krandasee avataḥ chaskabhaane bhiyasaane rodasee ahvayethaam,
yasya asau panthaaḥ rajasaḥ vi-maanaḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful** (*devaaya*) **divinity, unto whom we should** (*haviṣhaa*) **offer our praises and prayers with** (*vidhema*) **love and devotion?** (*rajasaḥ*) **The celestial bodies,** (*chaskabhaane*) **supporting each other with the gravitational force,** (*vi-maanaḥ*) **continue to move** (*krandasee*) **rapidly on** (*yasya*) **whose** (*asau*)(*panthaaḥ*) **pathways,** (*bhiyasaane*) **the fearful living beings living** (*rodasee*) **on the earth and other celestial bodies,** (*ahvayethaam*) **cry out** (*yam*) **to whom** (*avataḥ*) **for their protection, that God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

चौथे मन्त्र में जगत् के अनन्त विस्तार का कारक ईश्वर को ही बताया गया है।

वेन ऋषिः। आत्मा देवता। ४१ अक्षराणि। भुरिगार्षी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

यस्य॒ द्यौरु॒र्वी पृ॑थि॒वी च॑ म॒ही यस्या॒द उ॒र्व१॒॑न्तरि॑क्षम्।

यस्या॒सौ सूरो॒ वित॑तो महि॒त्वा कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥४॥ अथर्व ४:१:२:४

यस्य॑। द्यौः। उ॒र्वी। पृ॒थि॒वी। च॒। म॒ही। यस्य॑। अ॒दः। उ॒रु। अ॒न्तरि॑क्षम्॥

यस्य॑। अ॒सौ। सूरः॑। विऽत॑तः। म॒हि॒ऽत्वा। कस्मै॑। दे॒वाय॑। ह॒विषा॑। वि॒धे॒म॒॥४॥

वह (*कस्मै*) **कौन सुखस्वरूप** (*देवाय*) **देव है जिसको हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें?** (*यस्य*) **जिसकी** (*महिऽत्वा*) **महिमा से यह** (*द्यौः*) **द्युलोक** (*उर्वी*) **अनन्त विस्तार वाला बना** (*च*) **और यह** (*पृथिवी*) **पृथिवी जीवों का पालन करने वाली** (*मही*) **महान् हुई,** (*यस्य*) **जिसकी महिमा से** (*अदः*) **यह** (*अन्तरिक्षम्*) **अन्तरिक्ष** (*उरु*) **सब ओर फैला,** (*यस्य*) **जिसकी महिमा से** (*असौ*) **यह** (*सूरः*) **सूर्य** (*विऽततः*) **अपने प्रकाश से सब ओर फैला सा प्रतीत होता है, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।**

पाँचवे मन्त्र में पर्वत, सागर आदि को भी ईश्वर की महिमा बताया गया है।

वेन ऋषिः। आत्मा देवता। ४२ अक्षराणि। विराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

यस्य॒ विश्वे॑ हि॒मव॑न्तो महि॒त्वा स॑मु॒द्रे यस्य॑ र॒सामिदा॒हुः।

इ॒माश्च॑ प्र॒दिशो॒ यस्य॑ बा॒हू कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥५॥

अथर्व ४:१:२:५, ऋग् १०:१०:१२१:४, यजुः २५:१२

यस्य॑। विश्वे॑। हि॒मऽव॑न्तः। म॒हि॒ऽत्वा। स॒मु॒द्रे। यस्य॑। र॒साम्। इत्। आ॒हुः॥

इ॒माः। च॒। प्र॒ऽदिशः॑। यस्य॑। बा॒हू इति॑। कस्मै॑। दे॒वाय॑। ह॒विषा॑। वि॒धे॒म॒॥५॥

वह (*कस्मै*) **कौन सुखस्वरूप** (*देवाय*) **देव है जिसको हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें?** (*विश्वे*) **जगत् में ये** (*हिमवन्तः*) **बर्फ से ढके पहाड़ और** (*समुद्रे*) **सागर में** (*इत्*) **प्रविष्ट होती** (*रसाम्*) **जल से परिपूर्ण नदियाँ** (*यस्य*) **जिसकी** (*महिऽत्वा*) **महिमा का** (*आहुः*) **बखान (को दिखाती) करती हैं,** (*च*) **और** (*इमाः*) **यह सभी** (*प्रदिशः*) **दिशायें** (*यस्य*) **जिसकी** (*बाहू*) **बाँहों के समान फैली हैं, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।**

In the fourth mantra the sage describes God as the cause of the infinite spread of this Universe.

ṛiṣhiḥ venaḥ, **devataa** aatmaa, **vowels** 41, **chhandaḥ** bhurig aarṣhee paṅktiḥ, **svaraḥ** pañchamaḥ.

4. yasya dyaururvee pṛithivee cha mahee yasyaada urva1ntarikṣham, yasyaasau sooro vitato mahitvaa kasmai devaaya haviṣhaa vidhema. Atharva 4:1:2:4

yasya dyauḥ urvee pṛithivee cha mahee yasya adaḥ uru antarikṣham,
yasya asau sooraḥ vi-tataḥ mahi-tvaa kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful** (*devaaya*) **divinity, unto whom we should** (*haviṣhaa*) **offer our praises and prayers with** (*vidhema*) **love and devotion? By** (*yasya*) **whose** (*mahi-tvaa*) **glory** (*dyauḥ*) **the universe** (*urvee*) **acquired infinite dimensions** (*cha*) **and** (*pṛithivee*) **the earth** (*mahee*) **became great by supporting life, by** (*yasya*) **whose glory** (*adaḥ*) **the** (*antarikṣham*) **space** (*uru*) **is spread in all directions, by** (*yasya*) **whose glory** (*asau*) **the** (*sooraḥ*) **Sun** (*vi-tataḥ*) **appears to be far spread through its sunlight, God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the fifth mantra the sage describes the mountains, rivers and oceans etc. as the glorification of God.

ṛiṣhiḥ venaḥ, **devataa** aatmaa, **vowels** 42, **chhandaḥ** viraaḍ aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

5. yasya vishve himavanto mahitvaa samudre yasya rasaamidaahuḥ, imaashcha pradisho yasya baahoo kasmai devaaya haviṣhaa vidhema. Atharva 4:1:2:5, Ṛig 10:10:121:4, Yajuḥ 25:12

yasya vishve hima-vantaḥ mahit-vaa samudre yasya rasaam it aahuḥ,
imaaḥ cha pra-dishaḥ yasya baahoo kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful** (*devaaya*) **divinity, unto whom we should** (*haviṣhaa*) **offer our praises and prayers with** (*vidhema*) **love and devotion? The** (*himavantaḥ*) **snowclad mountains** (*vishve*) **in the World** (*aahuḥ*) **describe (show)** (*yasya*) **whose** (*mahitvaa*) **glory, and so do the** (*rasaam*) **rivers** (*it*) **finding their way** (*samudre*) **into the oceans;** (*cha*) **and** (*imaaḥ*) **all** (*pradishaḥ*) **directions are spread** (*yasya*) **like his** (*baahoo*) **arms. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

छठे मन्त्र में ईश्वर को ही दिव्य शक्तियों को चेतन करने वाला बताया गया है।

वेन ऋषिः। आत्मा देवता। ४० अक्षराणि। आर्षी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

आपो अग्रे विश्वमावन्गर्भं दधाना अमृता ऋतज्ञाः।
यासु देवीष्वधि देव आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥६॥

अथर्व ४:१:२:६, ऋग् १०:१०:१२१:७-८, यजुः २७:२५-२६

आपः। अग्रे। विश्वम्। आवन्। गर्भम्। दधानाः। अमृताः। ऋतऽज्ञाः॥
यासु। देवीषु। अधि। देवः। आसीत्। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम ॥६॥

वह (*कस्मै*) **कौन सुखस्वरूप** (*देवाय*) **देव है जिसको हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें?** (*विश्वम्*) **सृष्टि के** (*अग्रे*) **आरम्भ में** (*आपः*) **आवेशित परमाणुओं का एक महा सागर था** (*आवन्*) **जिसके प्रत्येक परमाणु के** (*गर्भम्*) **गर्भ में इस जगत् को** (*अमृताः*) **आस्तित्व में लाने का** (*ऋतऽज्ञाः*) **शाश्वत ज्ञान** (*दधानाः*) **था।** (*यासु*) **इस दिव्य** (*देवीषु*) **महासागर के** (*अधि*) **अधिष्ठाता के रूप में** (*देवः*) **परमेश्वर** (*आसीत्*) **विद्यमान था। दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।**

सातवे मन्त्र में ईश्वर को जगत् का विधाता बताया गया है।

वेन ऋषिः। आत्मा देवता। ४३ अक्षराणि। निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीमुत द्यां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥७॥

अथर्व ४:१:२:७, ऋग् १०:१०:१२१:१, यजुः १३:४, यजुः २३:१, यजुः २५:१०

हिरण्यऽगर्भः। सम्। अवर्तत। अग्रे। भूतस्य। जातः। पतिः। एकः। आसीत्॥
सः। दाधार। पृथिवीम्। उत। द्याम्। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम ॥७॥

वह (*कस्मै*) **कौन सुखस्वरूप** (*देवाय*) **देव है जिसको हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? यह** (*जातः*) **सर्वविदित है कि वह** (*हिरण्य*) **स्वर्णिम प्रकाश का** (*गर्भः*) **स्रोत,** (*अग्रे*) **सबसे पहले सभी जगह** (*सम्*) **समान रूप से** (*अवर्त्तत*) **विद्यमान, ईश्वर ही समस्त** (*भूतस्य*) **प्राणियों का** (*एकः*) **एकमात्र** (*पतिः*) **स्वामी** (*आसीत्*) **है।** (*सः*) **वह ही** (*पृथिवीम्*) **पृथ्वी,** (*द्याम्*) **सूर्य, चन्द्र** (*उत*) **आदि ग्रहों को** (*दाधार*) **धारण किए हुए है। इन दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।**

In the sixth mantra the sage declares God as the cause of awareness in the divine forces..
ṛiṣhiḥ venaḥ, **devataa** aatmaa, **vowels** 40, **chhandaḥ** aarṣhee paṅktiḥ, **svaraḥ** pañchamaḥ.

6. aapo agre vishvamaavangarbhan dadhaanaa amṛitaa ṛitajñaaḥ, yaasu deveeṣhvadhi deva aaseet kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

Atharva 4:1:2:6, Ṛig 10:10:121:7-8, Yajuḥ 27:25-26

aapaḥ agre vishvam aavan garbham dadhaanaaḥ amṛitaaḥ ṛitajñaaḥ,
yaasu deveeṣhu adhi devaḥ aaseet kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful** (*devaaya*) **divinity, unto whom we should** (*haviṣhaa*) **offer our praises and prayers with** (*vidhema*) **love and devotion?** (*agre*) **At the beginning of the creation, there existed** (*aapaḥ*) **a vast ocean of charged particles,** (*aavan*) **wherein each particle** (*dadhaanaaḥ*) **held** (*garbham*) **within itself** (*ṛitajñaaḥ*) **the eternal blueprint of bringing this** (*vishvam*) **universe** (*amṛitaaḥ*) **to life.** (*aaseet*) **There existed** (*devaḥ*) **God** (*adhi*) **as the custodian of** (*yaasu*) **this** (*deveeṣhu*) **divine matter. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the seventh mantra the sage describes God as the sustainer of the dynamics of the universe.
ṛiṣhiḥ venaḥ, **devataa** aatmaa, **vowels** 43, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

7. hiraṇyagarbhaḥ samavartataagre bhootasya jaataḥ patireka aaseet, sa daadhaara pṛithiveemuta dyaaṅ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

Atharva 4:1:2:7, Ṛig 10:10:121:1, Yajuḥ 13:4, Yajuḥ 23:1, Yajuḥ 25:10

hiraṇya-garbhaḥ sam avartata agre bhootasya jaataḥ patiḥ ekaḥ aaseet,
saḥ daadhaara pṛithiveem uta dyaam kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful** (*devaaya*) **divinity, unto whom we should** (*haviṣhaa*) **offer our praises and prayers with** (*vidhema*) **love and devotion? It is** (*jaataḥ*) **well known that he is the** (*garbhaḥ*) **source of all** (*hiraṇya*) **light with luster like gold,** (*sam*) **equally** (*avarttata*) **present everywhere,** (*agre*) **foremost and** (*aaseet*) **has been the** (*ekaḥ*) **sole** (*patiḥ*) **lord of** (*bhootasya*) **all living beings and non-living as well.** (*saḥ*) **He** (*daadhaara*) **sustains the** (*pṛithiveem*) **earth** (*uta*) **and all other** (*dyaam*) **celestial bodies in their orbits. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

आठवे मन्त्र में ईश्वर की प्रेरणा से इस जगत् का आरम्भ होना बताया गया है।

वेन ऋषिः। आत्मा देवता। ४२ अक्षराणि। विराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

आपो॑ व॒त्सं ज॒नय॑न्ती॒र्गर्भ॒मग्रे॒ समै॑रयन्।

तस्यो॒त जाय॑मान॒स्योल्ब॑ आसीद्धिर॒ण्यय॒: कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥८॥ अथर्व ४:१:२:८

आप॑:। व॒त्सम्। ज॒नय॑न्तीः। गर्भ॑म्। अग्रे॑। सम्। ऐर॒यन्॥

तस्य॑। उ॒त। जाय॑मानस्य। उल्ब॑:। आ॒सी॒त्। हि॒र॒ण्यय॑:। कस्मै॑। दे॒वाय॑। ह॒विषा॑। वि॒धे॒म॒ ॥८॥

वह (*कस्मै*) **कौन सुखस्वरूप** (*देवाय*) **देव है जिसको हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें?** (*अग्रे*) **सबसे पहले ईश्वर की चेतना से** (*सम्*)(*ऐरयन्*) **प्रेरित इस** (*आपः*) **आवेशित कणों के महासागर से** (*वत्सम्*) **महत् पिण्ड** (*जनयन्तीः*) **बना जो** (*जायमानस्य*) **पैदा होते हुए** (*उल्बः*) **अत्याधिक** (*हिरण्ययः*) **चमक वाला** (*आसीत्*) **था** (*उत*) **और** (*तस्य*) **उसके** (*गर्भम्*) **गर्भ में इस जगत् के निर्माण के लिए सारी प्रकृति व विकृतियाँ थी। इन दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।**

In the eighth mantra the sage declares that the process of creation got started with God's inspiration.

ṛiṣhiḥ venaḥ, **devataa** aatmaa, **vowels** 42, **chhandaḥ** viraaḍ aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

8. aapo vatsañ janayanteergarbhamagre samairayan,
tasyota jaayamaanasyolba aaseeddhiraṇyayaḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema. Atharva 4:1:2:8

aapaḥ vatsam janayanteeḥ garbham agre sam airayan,
tasya uta jaayamaanasya ulbaḥ aaseet hiraṇyayaḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful** (*devaaya*) **divinity, unto whom we should** (*haviṣhaa*) **offer our praises and prayers with** (*vidhema*) **love and devotion?** (*agre*) **At the beginning of creation, with God's consciousness and** (*sam*)(*airayan*) **inspiration** (*aapaḥ*) **the ocean of charged particles** (*janayanteeḥ*) **produced** (*vatsam*) **a huge body of matter** (*jaayamaanasya*) **which at the time of its birth** (*aaseet*) **was** (*ulbaḥ*) **extremely** (*hiraṇyayaḥ*) **brilliant.** (*uta*) **And in** (*tasya*) **its** (*garbham*) **womb, this body also had the key to the formation of various elements, bodies and things. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**